# प्रश्न–पत्र की योजना

कक्षा – प्रवेशिका
विषय – संस्कृत प्रथमपत्रम् (व्याकरण कौमुदी)
अवधि – 2 घण्टे 45 मिनट पूर्णांक – 80

1. उद्देश्य हेतु अंकभार –

| क्र.सं. | उद्देश्य | अंकभार | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | ज्ञान | 30 | 37.50% |
| 2. | अवबोध | 26 | 32.50% |
| 3. | अभिव्यक्ति | 24 | 30.00% |
| 4. | मौलिकता | - | - |
| योग | | 80 | 100% |

2. प्रश्नों के प्रकारवार अंकभार –

| क्र. सं. | प्रश्नों का प्रकार | प्रश्नों की संख्या | अंक प्रति प्रश्न | कुल अंक प्रतिशत | प्रतिशत प्रश्नों का | संभावित समय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | वस्तुनिष्ठ | 12 | 1 | 15% | 24% | 17 Min |
| 2. | अतिलघूत्तरात्मक | 06 | 1 | 7.5% | 12% | 11 Min |
| 3. | लघूत्तरात्मक | 12 | 1 | 15% | 24% | 17 Min |
| 4. | दीर्घउत्तरीय प्रश्न | 13 | 2 | 32.5% | 26% | 65 Min |
| 5. | निबंधात्मक | 07 | 3, 4 | 30% | 14% | 55 Min |
| | **योग :–** | **50** | - | **100** | **100** | **165 Min** |

विकल्प योजना : 7 प्रश्न

3. विषय वस्तु का अंकभार –

| क्र.सं. | विषय वस्तु | अंकभार | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | अजन्त पुल्लिंग + हलन्त पुल्लिंग (1–30 सूत्र) (सिद्धिः) | 20 | 25% |
| 2. | अजन्त पुल्लिंग + हलन्त पुल्लिंग (1–30 सूत्र) सूत्र व्याख्या | 10 | 12.5% |
| 3. | अजन्त पुल्लिंग स्त्रीलिंग प्रकरणम् (सिद्धिः) | 10 | 12.5% |
| 4. | अजन्त पुल्लिंग स्त्रीलिंग प्रकरणम् (सूत्र व्याख्या) | 06 | 7.5% |
| 5. | अजन्त नपुंसक लिंग प्रकरणम् (सिद्धिः) | 10 | 12.5% |
| 6. | अजन्त नपुंसक लिंग प्रकरणम् (सूत्र व्याख्या) | 04 | 5% |
| 7. | अव्यय प्रकरणम् (अर्थः प्रयोगश्च) | 05 | 6.25% |
| 8. | स्त्री प्रत्यय प्रकरणम् (सिद्धिः + व्याख्या) | 10 | 12.5% |
| 9. | धातुरूपाणि (पंचलकारेणु) | 05 | 6.25% |
| | | | |
| | **योग :–** | **80** | **100%** |

# प्रश्न–पत्र ब्ल्यू प्रिन्ट

कक्षा – प्रवेशिका (प्रथमपत्रम्) विषय :– व्याकरण कौमुदी पूर्णांक – 80

| क्र. सं | उद्देश्य इकाई / उप इकाई | ज्ञान | | | | | अवबोध | | | | | ज्ञानोपयोग / अभिव्यक्ति | | | | | कौशल / मौलिकता | | | | | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | वस्तुनिष्ठ | अति.लघु | लघु उत्तरात्मक | दीर्घउत्तरीय | निबन्धात्मक | वस्तुनिष्ठ | अति.लघु | लघु उत्तरात्मक | दीर्घउत्तरीय | निबन्धात्मक | वस्तुष्ठि | अति.लघु | लघु उत्तरात्मक | दीर्घउत्तरीय | निबन्धात्मक | वस्तुष्ठि | अति.लघु | लघुत्तरात्मक | दीर्घउत्तरीय | निबन्धात्मक | |
| 1. | अजन्त पुल्लिंग + हलन्त पुल्लिंग (1–30 सूत्र) (सिद्धिः) | 1(1) | 1(1) | 8(1) | – | – | – | – | – | 6(3) | – | – | – | – | – | 4(1) | – | – | – | – | – | 20(7) |
| 2. | अजन्त पुल्लिंग + हलन्त पुल्लिंग (1–30 सूत्र) सूत्र व्याख्या | – | – | 2(–) | – | – | – | – | – | 4(2) | – | – | – | – | – | 4(1) | – | – | – | – | – | 10(3) |
| 3. | अजन्त पुल्लिंग स्त्रीलिंग प्रकरणम् (सिद्धिः) | – | – | 2(–) | – | – | – | – | – | 4(2) | – | – | – | – | – | 4(1) | – | – | – | – | – | 10(3) |
| 4. | अजन्त पुल्लिंग स्त्रीलिंग प्रकरणम् (सूत्र व्याख्या) | – | – | – | – | – | – | – | – | 6(3) | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | 6(3) |
| 5. | अजन्त नपुंसक लिंग प्रकरणम् (सिद्धिः) | 1(–) | 3(–) | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | 6(2) | – | – | – | – | – | – | 10(2) |
| 6. | अजन्त नपुंसक लिंग प्रकरणम् (सूत्र व्याख्या) | – | 1(–) | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | 3(1) | – | – | – | – | – | – | 4(1) |
| 7. | अव्यय प्रकरणम् (अर्थः प्रयोगश्च) | 5(–) | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | 5(–) |
| 8. | स्त्री प्रत्यय प्रकरणम् (सिद्धिः + व्याख्या) | – | 1(–) | – | – | – | – | – | – | 6(3) | – | – | – | – | 3(1) | – | – | – | – | – | – | 10(4) |
| 9. | धातुरूपाणि (पंचलकारेणु) | 5(–) | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | 5(–) |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | **योग :–** | **12(1)** | **6(1)** | **12(1)** | **–** | **–** | **–** | **–** | **–** | **26(13)** | **–** | **–** | **–** | **–** | **12(4)** | **12(3)** | **–** | **–** | **–** | **–** | **–** | **80(23)** |
| | | **30(3)** | | | | | **26(13)** | | | | | **24(7)** | | | | | **–** | | | | | **80(23)** |

**विकल्पों की योजना :– प्र.सं. 17–23 (7) में एक आंतरिक विकल्प है**

**नोट :– कोष्ठक में बाहर की संख्या अंकों की तथा भीतर प्रश्नों की द्योतक है।**

**हस्ताक्षर**

# माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

आदर्शनपत्रम्
कक्षा–प्रवेशिका
संस्कृतम्(प्रथमपत्रम्)
विषय–कोड : 95
पूर्णाकाः 80

**खण्ड–अ**

**वस्तुनिष्ठप्रश्नाः–** 12x1=12

1. (i) ''अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्'' इति सूत्रेण विधीयते–
   (अ) अव्ययसंज्ञा (ब)प्रातिपदिकसंज्ञा (स)गुणसंज्ञा (द)पदसंज्ञा

   (ii) 'ज्ञानानि' इत्यत्र क आगमः?
   (अ) नुट् (ब)मुक् (स)धुट् (द)नुम्

   (iii) 'स्वर्' इति अव्ययसंज्ञकं भवति–
   (अ)स्वरादित्वात् (ब)असर्वविभक्तित्वात् (स)कृदन्तत्वात् (द)अव्ययीभावत्वात्

   (iv) कम्' इति अव्ययस्य कोऽर्थः?
   (अ) जलम् (ब)शिरः (स)सुखम् (द)एते सर्वे

   (v) 'आहोस्वित्' इति अव्ययं प्रयुज्यते–
   (अ)विकल्पे (ब)वितर्के (स)भर्त्सने (द)सादृश्ये

   (vi) अव्ययसंज्ञाविधायकसूत्रम् अस्ति–
   (अ)कृन्मेजन्तः (ब)क्त्वातोसुन्कसुनः (स)अव्ययीभावश्च (द)एतानि सर्वाणि

   (vii) 'रामः लक्ष्मणः............. वनम् अगच्छताम्' इत्यत्र समुचितमव्ययं स्यात्–
   (अ) तथा (ब)अत्र (स) च (द)श्वः

   (viii) भू–धातोः लट्–लकारे रूपं भवति–
   (अ)भवतु (ब)भविष्यति (स)अभवत् (द)भवति

   (ix) सेव्–धातोः लोट्–लकारे प्रथमपुरुष–एकवचने किं रूपम्?
   (अ)सेवते (ब)सेवताम् (स)असेवत (द)सेवेत

   (x) 'वदिष्यति' इति रूपं भवति–
   (अ)लट्लकारे (ब)लोट्लकारे (स)लृट्लकारे (द)लङ्लकारे

   (xi) अगच्छत् इत्यत्र को धातुः?
   (अ) गच्छ् (ब)गम् (स)गा (द)अगम्

   (xii) चुर्–धातोः विधिलिङ्लकारे उत्तमपुरुष–एकवचने रूपम् अस्ति–
   (अ)चोरयेयुः (ब)चोरयेत् (स) चोरयेयम् (द)चोरयेः

2. **रिक्तस्थानं पूरयत** 6x1=6

   (i) ''एकाचो...................'' इति सूत्रं पूरयत।

   (ii) ''अतोऽङ्गात्क्लीबात्.......................... अम्'' ।

(iii) '' स्वमोर्नपुंसकात्'' इत्यनेन ................ भवति।
(iv) ''...............................भाषितपुंस्कं पुंवद्गालवस्य'' इति सूत्रं पूरयत।
(v) ''टिड्ढाणञ्................................................ इति सूत्रं पूरयत।
(vi) ''क्लीबात्.................................शी स्यात्।

3. **लघूत्तरात्मकप्रश्नाः–** 12x1=12

(i) 'रामः' इत्यत्र सुप्रत्ययगतस्य उकारस्य इत्संज्ञासूत्रं लिखत।
(ii) सर्वेषाम् इत्यत्र सुडागमविधायकसूत्रं लिखत।
(iii) हरये इति पदे गुणः केन सूत्रेण भवति?
(iv) सखा इत्यत्र अनङादेशः केन सूत्रेण भवति?
(v) 'रायो हलि' इति सूत्रेण किं विधीयते?
(vi) 'लिट्' इत्यत्र चर्त्वविधायकं सूत्रं किम्?
(vii) चतुर्ण्णाम् इत्यत्र ण–कारस्य द्वित्वं केन सूत्रेण भवति?
(viii) 'नेदमदसोरकोः' इति सूत्रेण किं विधीयते?
(ix) 'रमे' इत्यत्र औकारस्य स्थाने कः आदेशो भवति?
(x) 'श्रीणाम्' इत्यत्र नदीसंज्ञासूत्रं लिखत।
(xi) 'न विभक्तौ तुस्माः' इति सूत्रस्यार्थो लेख्यः।
(xii) 'ख्यत्यात्परस्य' इति सूत्रस्योदाहरणं लिखत।

## खण्ड–ब

4. 'रामाः' इति रूपस्य ससूत्रं सिद्धिर्विधेया। 2
5. 'सख्युः' इत्यस्य रूपसिद्धिर्विधेया। 2
6. 'राः' इतिपदं ससूत्रं साधयत। 2
7. 'एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' इतिसूत्रस्य सोदाहरणमर्थो लेख्यः। 2
8. 'शरोऽचि' इतिसूत्रस्य सोदाहरणमर्थो लेख्यः। 2
9. 'हे रमे!' इति प्रयोगं ससूत्रं साधयत। 2
10. 'क्रोष्ट्री' इति रूपस्य ससूत्रं सिद्धिर्विधेया। 2
11. 'याडापः' इति सूत्रं व्याख्यायताम्। 2
12. 'स्त्रियाः' इति सूत्रस्य व्याख्या कार्या। 2
13. 'न षट्स्वस्रादिभ्यः' इति सूत्रं व्याख्यायताम्। 2
14. 'भवति' इति रूपं ससूत्रं साधयत। 2
15. 'श्वस्रूः' इति पदं ससूत्रं साधयत। 2
16. 'क्रीतात्करणपूर्वात्' इति सूत्रं व्याख्येयम्। 2

## खण्ड–स

17. अधोलिखितेषु कयोश्चिद् द्वयोः ससूत्रं रूपसिद्धिः करणीया। 3
(अ) ज्ञानम् (ब)वारिणः (स)दध्नोः (द)धातृणी
18. अधोलिखितेषु कयोश्चिद् द्वयोः ससूत्रं रूपसिद्धिः करणीया। 3
(अ) सुधि (ब)सुलूनि (स)प्रद्युना (द)प्ररि
19. अधोलिखितेषु कयोश्चिद् द्वयोः सूत्रयोः व्याख्या करणीया। 3
(अ) यस्येति च (ब)मिदचोऽन्त्यात्परः (स)स्वमोर्नपुंसकात् (द)विभाषा ङिष्योः
20. अधोलिखितेषु कयोश्चिद् द्वयोः ससूत्रं रूपसिद्धिः करणीया। 3
(अ) देवी (ब)मृद्वी (स)गोपालिका (द)कुरूः

## खण्ड–द

21. अधोलिखितेषु कयोश्चिद् द्वयोः ससूत्रं रूपसिद्धिः विधेया। 4
(अ)रामान् (ब)सर्वे (स)हरिभ्याम् (द)द्वौ
22. अधोलिखितेषु कयोश्चिद् द्वयोः सूत्रयोः व्याख्या कार्या। 4
(अ) सरूपाणामेकषेष एकविभक्तौ (ब)नादिचि (स)अमि पूर्वः (द) एकवचनं सम्बुद्धिः
23. अधोलिखितेषु कयोश्चिद् द्वयोः ससूत्रं रूपसिद्धिः विधेया। 4
(अ) रमया (ब)मतीः (स)जरसौ (द)तिस्रः

# प्रश्न–पत्र की योजना

कक्षा – प्रवेशिका
विषय – संस्कृतम् द्वितीयपत्रम्
अवधि – 2 घण्टे 45 मिनट पूर्णांक – 80

1. उद्देश्य हेतु अंकभार –

| क्र.सं. | उद्देश्य | अंकभार | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | ज्ञान | 41 | 51.25% |
| 2. | अवबोध | 17 | 21.25% |
| 3. | अभिव्यक्ति | 18 | 22.50% |
| 4. | मौलिकता | 4 | 5% |
| योग | | 80 | 100% |

2. प्रश्नों के प्रकारवार अंकभार –

| क्र. सं. | प्रश्नों का प्रकार | प्रश्नों की संख्या | अंक प्रति प्रश्न | कुल अंक प्रतिशत | प्रतिशत प्रश्नों का | संभावित समय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | वस्तुनिष्ठ | 12 | 1 | 15% | 24% | 24 Min |
| 2. | अतिलघूत्तरात्मक | 06 | 1 | 7.5% | 12% | 12 Min |
| 3. | लघूत्तरात्मक | 12 | 1 | 15% | 24% | 24 Min |
| 4. | दीर्घउत्तरीय प्रश्न | 13 | 2 | 32.5% | 26% | 55 Min |
| 5. | निबंधात्मक | 07 | 3, 4 | 30% | 14% | 50 Min |
| | **योग :–** | **50** | - | **100** | **100** | **165 Min** |

विकल्प योजना : आन्तरिक 07

3. विषय वस्तु का अंकभार –

| क्र.सं. | विषय वस्तु | अंकभार | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | पद्यभागः | 40 | 50% |
| 2 | गद्यभागः | 25 | 31.25% |
| 3 | रचना | 15 | 18.75% |
| | | | |
| | **योग :–** | **80** | **100%** |

# प्रश्न–पत्र ब्ल्यू प्रिन्ट

कक्षा – प्रवेशिका          विषय :– संस्कृतम् द्वितीयपत्रम्          पूर्णांक – 80

| क्र. सं | उद्देश्य इकाई / उप इकाई | ज्ञान | | | | | अवबोध | | | | | ज्ञानोपयोग / अभिव्यक्ति | | | | | कौशल / मौलिकता | | | | | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | वस्तुनिष्ठ | अति.लघु | लघु उत्तरात्मक | दीर्घउत्तरीय | निबन्धात्मक | वस्तुनिष्ठ | अति.लघु | लघु उत्तरात्मक | दीर्घउत्तरीय | निबन्धात्मक | वस्तुष्ठि | अति.लघु | लघु उत्तरात्मक | दीर्घउत्तरीय | निबन्धात्मक | वस्तुष्ठि | अति.लघु | लघुत्तरात्मक | दीर्घउत्तरीय | निबन्धात्मक | |
| 1 | पद्यभागः | 5(1) | 3(1) | 3(1) | 16(8) | – | – | – | 2(–) | 6(2) | – | – | – | – | – | 5(1) | – | – | – | – | – | **40(14)** |
| 2 | गद्यभागः | 5(–) | – | 5(–) | – | – | – | 3(–) | – | 6(3) | – | – | – | – | – | 6(2) | – | – | – | – | – | **25(5)** |
| 3 | रचना | 2(–) | – | 2(–) | – | – | – | – | – | – | – | – | – | – | 4(2) | 3(1) | – | – | – | – | 4(1) | **15(4)** |
| | **योग :–** | **12(1)** | **3(1)** | **10(1)** | **16(8)** | – | – | **3(–)** | **2(–)** | **12(5)** | – | – | – | – | **4(2)** | **14(4)** | – | – | – | – | **4(1)** | **80(23)** |

**विकल्पों की योजना :– प्र.सं. 18,19, 20, 21, 22 व 23 में एक आंतरिक विकल्प है।**          **नोट :– कोष्ठक में बाहर की संख्या अंकों की तथा भीतर प्रश्नों की द्योतक है।**

**हस्ताक्षर**

# माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

आदर्श प्रश्न पत्रम्

कक्षा–प्रवेशिका

संस्कृतम्(द्वितीयपत्रम्)

विषय कोड : 95

पूर्णांकाः 80

**खण्ड अ**

1. वस्तुनिष्ठ–प्रश्नाः 12x1=12

(i) गीतामृतपाठानुसारम् एनम् आत्मानं कः न दहति?

(अ) आपः (ब) आकाशः (स)पावकः (द)शस्त्रम्

(ii) केषां मैत्री छायेव भवति?

(अ) खलसज्जनानाम् (ब)स्त्रीपुरुषाणाम् (स)गुरुशिष्याणाम् (द)बालकबालिकानाम्

(iii) रामः कति कति च वर्षाणि दण्डकारण्यम् आश्रितः?

(अ) नव नव च (ब)षट् सप्त च (स) पंच सप्त च (द) सप्त सप्त च

(iv) वरतन्तुः शिष्यः कः?

(अ)उपमन्युः (ब)कौत्सः (स)रघुः (द)रामः

(v) गीतामृतपाठानुसारम् आहारः कति विधः?

(अ) एकविधः (ब)द्विविधः (स)त्रिविधः (द)चतुर्विधः

(vi) पंचतन्त्रस्य लेखकः कः?

(अ)राजेन्द्रमिश्रः (ब) पं. विष्णुशर्मा (स)पं. गोपालशर्मा (द)पं. नरेन्द्रः

(vii) कच्छपस्य नाम किम् आसीत्?

(अ)संकटः (ब)विकटः (स)दुर्बुद्धिः (द)कम्बुग्रीवः

(viii) महिलारोप्यस्य समीपे कस्य मठायतनम् आसीत्?

(अ) महादेवस्य (ब)विष्णोः (स)हनुमतः (द)ब्रह्मणः

(ix) ताम्रचूडः भिक्षापात्रं कुत्र अवलम्ब्य रात्रौ स्वपिति?

(अ)प्रकोष्ठे (ब)आसन्दिके (स)कपाटिकायाम् (द)नागदन्ते

(x) सिंह्या एकान्ते नीत्वा कः प्रबोधितः?

(अ) शृगाली (ब)शृगालः (स)सिंहः (द)गजः

(xi) अस्–धातोः लट्–लकारस्य उत्तमपुरुषस्य एकवचने रूपं विद्यते–

(अ)अस्मि (ब)असि (स)स्मः (द)अस्ति

(xii) लता–शब्दस्य द्वितीया–विभक्ति–बहुवचने रूपं भवति–

(अ)लते (ब) लता (स)लताः (द)लताभिः

2. रिक्तस्थानानि पूरयत– 6x1=6

(i)स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं ............. उच्यते।

(ii) कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिः ...............।

(iii) अहं हि वचनाद् राज्ञः पतेयमपि .................।

(iv) स कूर्म इव दुर्बुद्धिः ............... भ्रष्टो विनश्यति।
(v) उष्मापि वित्तजो वृद्धिं..............नयति देहिनाम्।
(vi) अकृत्यं नैव कर्त्तव्यं ............ अप्युपस्थिते।

3. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि एकशब्देन लिखत– 12x1=12

(i) शरद्घनं कः न अर्दति?
(ii) सर्वस्य नरस्य भूषणं किम्?
(iii) अर्जुनस्य अधिकारः कुत्र भवेत्?
(iv) छन्दशास्त्रे कति गणाः भवन्ति?
(v) कारणे सति कार्यस्य अनुपत्तिः कस्मिन् अलंकारे भवति?
(vi) कच्छपस्य मित्रे के?
(vii) महिलारोप्यं नाम नगरं कुत्र अस्ति?
(viii) सिंही कति पुत्रान् अजीजनत्?
(ix) सिंहशिशुशृगालपुत्रकथानुसारं ''युष्मत्कुलशत्रुः'' कः?
(x) मूषकराजस्य नाम किम् आसीत्?
(xi) पति–शब्दस्य तृतीया–विभक्ति–एकवचनस्य रूपं लिखत।
(xii) जि–धातोः लृट्–लकारस्य प्रथमपुरुष–एकवचनस्य रूपं विलिखत।

**खण्ड–ब**

4. कीदृशं वाङ्मयं तप उच्यते? 2
5. एतत्त्रयं जगति पुण्यकृतः लभन्ते, इत्यत्र त्रयमित्यनेन किमभिप्रेतम्? 2
6. वसन्ततिलकाछन्दसः लक्षणं लेखनीयम्। 2
7. शार्दूलविक्रीडितछन्दसः उदाहरणं लेखनीयम्। 2
8. विभावनालंकारस्य लक्षणं लिखत। 2
9.रूपकालंकारस्य उदाहरणं लिखत। 2
10. अमरकोषानुसारम् असुरस्य नामद्वयं लेखनीयम्। 2
11. ब्रह्मणः नामद्वयं विलिखत। 2
12.'' विधुरेऽपि काले धैर्यं न त्याज्यम्'' कथं लिखत? 2
13. संन्यासिनोः वार्तां श्रुत्वा हिरण्यकेन किं कृतम्? 2
14. सिंही शृगालसुतं किमर्थं न खादितवती? 2
15.'अस्मद्' शब्दस्य चतुर्थी–विभक्तेः रूपाणि लिखत। 2
16. कृ–धातोः लङ्लकारस्य उत्तमपुरुषस्य रूपाणि लिखत। 2

**खण्ड–स**

17. अधोलिखितयोः श्लोकयोः एकस्य सप्रंसगव्याख्या लेखनीया– 3

(क) पुरा देवासुरे युद्धे पिता त`मम राघव!
रक्षितेन वरौ दत्तौ सशल्येन महारणे।।

(ख) को न याति वशं लोके मुखे पिण्डे न पूरितः।
मृदंगो मुखलेपेन करोति मधुरध्वनिम्।।

18. अधोलिखितयोः श्लोकयोः एकस्य सप्रसंग–भावार्थः लेखनीयः। 1+3=4

(क) यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

(ख) विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरतिर्व्यसनं श्रुतौ, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।

19. अधोलिखितयोः श्लोकयोः एकस्य सप्रसंग–व्याख्या लेखनीया। 1+3=4

(क) यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः, स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः, सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ते।।

(ख) समाप्तविद्येन मया महर्षिः विज्ञापितोऽभूद् गुरुदक्षिणायै।
स मे चिरायास्खलितोपचारां तां भक्तिमेवागणयत्पुरस्तात्।।

20. एकस्याः कथायाः सारांशः संस्कृतेन लेख्यः। 3

(क) सिंहशिशु–शृगालपुत्रकथा।

(ख) हिरण्यक–ताम्रचूडकथा।

## खण्ड–द

21. अधोलिखितगद्ययोः कस्यचिद् एकस्य सप्रसंग–व्याख्या लेखनीया। 3

(क) अथाऽसावभ्यागतः परं कोपमुपागतस्तमुवाच–'भोः ताम्रचूड ! परिजातस्त्वं सम्यङ् न सुहृत्। तेन मया सह साह्लादं न जल्पसि। तदेकमठप्राप्त्याऽपि त्वं गर्वितः, व्यक्तः सुहृत्स्नेहः, नैतद्वेत्सि यत्त्वया मठाश्रयव्याजेन नरकोपार्जनं कृतम्।

(ख) तदाकर्ण्य सिंही अन्तर्विहस्य प्राह–सम्यक् शृणु, वत्स! त्वं शृगालीसुतः। कृपया मया स्वस्तनक्षीरेण पुष्टिं नीतः। तद्यावदेतौ मत्पुत्रौ शिशुत्वात्, त्वां शृगालं न जानीतः, तावद् द्रुततरं गत्वा स्वजातीयानां मध्ये मिलितो भव। नो चेत् आभ्यां हतो मृत्युपथं समेष्यसि।

22. भवान् सत्येन्द्रः राजकीय–प्रवेशिका–संस्कृतविद्यालय–शान्तिनगरस्य छात्रः, ज्येष्ठभ्रातुः विवाहाय दिनत्रयस्य अवकाशार्थं प्रार्थनापत्रं लिखतु। 3

अथवा

ग्रामस्य स्वच्छतायै सरपंचमहोदयाय प्रार्थनापत्रं लिखतु।

23. कमप्येकं विषयमवलम्ब्य निबन्धं लिखत। 4

(क) श्रीकृष्णः (ख) स्वस्थवृत्तम् (ग) संस्कृतदिवसः